This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 6141

Unique Paper Code : 205202 E

Name of the Paper : उत्तरमध्यकालीन कविता

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. बिहारी के श्रृंगार वर्णन का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

रहीम के 'नीति काव्य' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

2. भूषण वीर रस के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

घनानंद की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

3. नैतिकता की दृष्टि से गिरिधर के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

द्विजदेव के काव्य में प्रकृति-चित्रण पर विचार कीजिए।

P.T.O.

4. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8

(क) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा नें कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन॥

(ख) हीन भएँ जलमीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही कौं लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यौं समझै, जड़ मीत के पानि परे कौं प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनँद जीव की जीवनि जान ही जानै॥

(ग) जो तुझको तोला झुके, तू झुक सेर पचीस,
मरोर करे इक तस्सु भर, कीजै हाथ बईस
कीजै हाथ बईस, रीति व्यवहार की ऐसी
जैसा जैसा देव, जगत में पूजा तैसी
कह गिरिधर कविराय, रोते के संग रोते जो
हँसते सँग हँस मिलो, पुरुष हँस के बोले जो।

5. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) उद्घाटित कीजिए : 7+7

(क) निर्देश : भाषा सौन्दर्य :

जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि॥
मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान।
धरयो मनौ हिय-धर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान॥

(ख) निर्देश : प्रकृति चित्रण :

बायु बहारि-बहारि रहे छिति, बीथीं सुगंधिनि जातिं सिंचाई।
त्यौं मधुमाँति-मिलिंद सबै, जय के करषान रहे कछु गाई॥
मंगल-पाठ पढ़ैं 'द्विजदेव' सबै विधि सौं सुखमा उपजाई।
साजि रहे सब साज घने, बन मैं ऋतुराज की आनि अवाई॥

(ग) निर्देश : भाव सौन्दर्य :

देव न देखति हौं दुति दूसरी, देखे हैं जा दिन ते ब्रजभूप मैं,
पूरि रही री वही धुनि कानन, आनन आन न ओप अनूप मैं;
ए अखियाँ सखियाँ न हमारियै जाय मिली जलबुंद ज्यौं कूप मैं,
कोटि उपाय न पाइए फेरि, समाय गईं रँगराय के रूप मैं॥